



## “अज्ञेय की कहानियों के भाषा रूप का अध्ययन”

**भावना सिंह परिहार**  
शोधार्थी, हिन्दी विभाग  
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

**डॉ. क्षिप्रा द्विवेदी**  
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग  
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

### सारांश –

अज्ञेय की भाषा और आधुनिकता का अध्ययन हमें उनके लेखन के गहरे और व्यापक आयामों को समझने में मदद करता है। अज्ञेय का साहित्य आधुनिकता की विशिष्टताओं को आत्मसात करता है, जिसमें समाज, मानसिकता, अस्तित्ववाद और व्यक्तित्व के संकटों को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है। उन्होंने अपनी भाषा को केवल कथा का माध्यम नहीं माना, बल्कि एक सशक्त उपकरण के रूप में प्रयोग किया, जिसके माध्यम से उन्होंने समाज के जटिल मुद्दों और मानव अस्तित्व की सूक्ष्मता को उजागर किया। अज्ञेय की भाषा में प्रयोगशीलता, नवाचार और प्रतीकात्मकता की प्रधानता है। उन्होंने परंपरागत हिंदी साहित्य से बाहर निकलकर आधुनिकता की नयी सोच और दृष्टिकोण को अपनाया। उनकी भाषा सरल होते हुए भी गहरे अर्थ और मानसिक द्वंद्व को प्रकट करती है, जो उनके पात्रों और समाज की बदलती परिस्थितियों के अनुरूप है। उनके लेखन में अस्तित्ववाद, नैतिकता, स्वतंत्रता और मानवाधिकार जैसे आधुनिक विचारों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखता है। समाज के राजनीतिक और सामाजिक संघर्षों, आंतरिक मानसिक द्वंद्वों और व्यक्तित्व की खोज में अज्ञेय की भाषा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। वे अपनी कहानियों के माध्यम से उन विचारों और चिंताओं को प्रस्तुत करते हैं जो समकालीन समाज के लिए प्रासंगिक हैं। इस प्रकार, अज्ञेय की भाषा न केवल साहित्यिक दृष्टि से आधुनिक है, बल्कि यह समाज और मनुष्य की जटिलताओं की गहरी समझ को प्रकट करती है। उनके लेखन ने हिंदी साहित्य में आधुनिकता को एक नया रूप दिया और उनके साहित्यिक योगदान को स्थायी बनाया।



**मुख्य शब्द –** अज्ञेय, प्रयोगशीलता, नवाचार, और प्रतीकात्मकता, भाषा एवं आधुनिकता।

### प्रस्तावना –

हिंदी साहित्य में अज्ञेय का स्थान विशिष्ट और अनुपम है। अज्ञेय हिंदी के एक प्रमुख साहित्यकार, कवि, उपन्यासकार और आलोचक के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनका साहित्य केवल काव्य या गद्य तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके लेखन ने समकालीन समाज और मनोविज्ञान के गहरे पहलुओं को भी उजागर किया है। अज्ञेय की कहानियों में न केवल विषयवस्तु का गहराई से विश्लेषण होता है, बल्कि उनकी भाषा और शैली भी बेहद

विशिष्ट और प्रयोगात्मक है। उनके गद्य का रूप, भाषा का प्रयोग और उनके पात्रों की भाषा की संरचना उनकी साहित्यिक पहचान को मजबूती से स्थापित करती है।

अज्ञेय का साहित्य आधुनिकता और प्रयोगवादी दृष्टिकोण का अनूठा संगम है। उनके लेखन में समाज, मनुष्य, अस्तित्व और मनोविज्ञान के जटिल रिश्तों का गहन अन्वेषण होता है। उन्होंने अपनी कहानियों में न केवल सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को उठाया, बल्कि मानव अस्तित्व के सूक्ष्म पहलुओं का भी विश्लेषण किया। उनकी भाषा में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, नयापन और आदान-प्रदान की अनूठी शैली देखने को मिलती है। अज्ञेय की कहानियों में भाषा के रूप में गहरी सूक्ष्मता, प्रतीकात्मकता और बिंबात्मकता मिलती है, जो उनके कथ्य को प्रभावशाली और विचारोत्तेजक बनाती है।

इस शोधपत्र का उद्देश्य अज्ञेय की कहानियों के भाषा रूप का विस्तृत अध्ययन करना है। अज्ञेय ने भाषा का जिस प्रकार से प्रयोग किया है, वह उनकी साहित्यिक अस्मिता और रचनात्मकता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। उनकी भाषा में परंपरा और नवाचार का अद्वितीय मिश्रण मिलता है, जो उसे अन्य साहित्यकारों से अलग पहचान दिलाता है। इस अध्ययन के माध्यम से हम यह जानने की कोशिश करेंगे कि अज्ञेय की भाषा में क्या विशेषताएँ हैं, उनकी शैली का क्या प्रभाव है और उनकी कहानियों में भाषा के रूप का क्या महत्व है?

अज्ञेय ने अपनी कहानियों में जिस भाषा का प्रयोग किया है, वह आधुनिक गद्य का श्रेष्ठ उदाहरण है। विषय-वस्तु के अनुसार उनकी भाषा में भेद मिलता है। उन्होंने जहाँ संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रयोग किया है, वहीं बोलचाल की सरल भाषा का भी। आवश्यकतानुसार अंग्रेजी के शब्द ही नहीं वाक्यखण्ड भी उनकी भाषा में दिखाई पड़ते हैं। अज्ञेय को अलग अलग भाषा के शब्दों से परहेज नहीं है, वह अभिव्यक्ति को सटीक बनाने के प्रयोजन से उनका प्रयोग करते हैं। उनकी विभिन्न कहानियों में शब्द प्रयोग का यह कौशल देखा जा सकता है।

अज्ञेय की कहानियों की भाषा के उदाहरणों से पता चलता है कि उन्होंने विभिन्न भाषाओं के समीकरण से अपना गद्य तैयार किया है जैसे कहानी लेखन के प्रथम चरण में संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रयोग हुआ है। ये क्रान्तिकारी जीवन से संबंधित कहानियाँ हैं। अज्ञेय ने स्वीकार किया है कि पहली खेप की कहानियाँ क्रान्तिकारी जीवन की है, क्रान्ति समर्थन की हैं और क्रान्तिकारियों की मनोरचना और उनके कर्म प्रेरणाओं के बारे में उभरती शंकाओं की हैं। बन्दी जीवन में कैसे कुछ को तपाया, निखारा तो कुछ को तोड़ा भी, इसका बढ़ता हुआ अनुभव का ठण्डापन और सन्तुलन न देता यह असंभव था और सन्तुलन वांछित भी क्यों नहीं था। बन्दी जीवन जहाँ अनुभव संघर्ष का काल था वहाँ कारागार मेरा दूसरा विश्वविद्यालय भी था। पढ़ने की काफी सुविधाएँ थीं और उनका पूरा लाभ भी उठाया, पहले साहित्य और विज्ञान का विद्यार्थी रहा था तो यहाँ उन विद्याओं का भी परिचय प्राप्त किया जो क्रान्ति कर्मों के लिए अधिक उपयोगी होती इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति, मनोविज्ञान, मनोविश्लेषण और दर्शन का साहित्य भी इन दिनों पढ़ा, एक वर्ष जेल में और वर्ष भर नजबन्दी में बिताकर जब मुक्त हुआ तब यह नहीं कि क्रान्ति का उत्साह ठण्डा पड़ चुका था, पर आतंकवाद और गुप्त आन्दोलन अवश्य पीछे छूट गये थे और हिंसा की उपयोगिता पर अनेक प्रश्न चिन्ह लगे हुए थे?<sup>1</sup>

### विश्लेषण –

अज्ञेय के इस कथन से स्पष्ट है कि विभिन्न विषयों के अध्ययन के क्रम में उन्होंने एक ऐसी गद्य भाषा भी अपने लिए तैयार की जिसमें वह सफल अभिव्यक्ति कर सकते थे। इस माने में अज्ञेय की दृष्टि शुरू से ही उदार रही है। शिल्प पर पड़ने वाले बाह्य प्रभावों को ईमानदारीपूर्वक स्वीकार भी किया है। शिल्प के विकास की परिणतियों को उन्होंने रेखांकित भी किया है। उनका कथन है, “हिन्दी का लेखक अधिकारी हिन्दीतर विदेशी साहित्य भी पढ़ता है, इसलिए जिस साहित्य में से साहित्य, जिस कहानी में से कहानी निकलती है उसका व्यास भी निरन्तर फैलता गया है। जिन मिथ्या सिद्धान्तों, वायदों, निराधार गर्ववित्तियों और निजी पैतरेबाजियों के नमूने हमें लगातार इधर देखने को मिलते रहे हैं, उनका एक मुख्य कारण यह भी है कि हिन्दी का लेखक अपनी भंगिमाओं और तेवरों से हिन्दी पाठक को प्रभावित करने के अपने अभिमान में उन विदेशी साहित्य स्रोतों को छुपाता रहता है जिनसे वह प्रेरणा पाता रहा है। यही कारण है कि बहुत सी नयी बातें जो केवल शिल्प के विकास की बातें हैं और विकास के तर्क के अधीन होने के कारण जिसका आविर्भाव एक सहज परिणित मात्र है न केवल नये नये दावों का आधार बनती है, वरंच शिल्प की आलोचनामूलक पहचान को कुन्द करती है।”<sup>2</sup>

अज्ञेय की काव्यात्मक भाषा का प्रमाण इस बात से मिलता है कि अनेक कहानियों में उन्होंने कविता पंक्तियों का प्रयोग किया है। बसंत शीर्षक कहानी में एक स्त्री गाती है—

फूल कचनार के, प्रतीक मेरे प्यार के।  
प्रार्थना सी उर्ध्व स्फुट काँपती रही कली,  
पत्तियों का सम्पुट निवेदिता ज्यों अंजलि,  
आये फिर दिन मनुहार के, दुलार के .....।<sup>3</sup>

वस्तुतः कहानी में कविता के प्रयोग को लेकर कई प्रकार के विचार व्यक्त होते रहे हैं। स्वयं अज्ञेय ने एक जगह लिखा है कि कहानी का नया रूझान काव्यत्व की छूत से बचना चाहता है पर जितने भी आग्रह कहानी क्षेत्र में प्रकट हुए हैं उनमें से कोई भी ऐसा नहीं है जो पारिभाषिक आधार पर ही काव्यत्व को निषिद्ध सिद्ध कर दे। रूचि वैचित्र्य के कारण ही कुछ कहानीकारों ने कवियों द्वारा लिखी गई कहानियों को उनके क्षेत्र में अनाधिकार प्रवेश घोषित किया है। वास्तव में नई प्रवृत्तियों में ऐसी कहानियों का अपना अलग स्थान है बल्कि अच्छी काव्यगत कहानी कदाचित नई माँग को अधिक सघन रूप से पूरा कर सकती है। कहानी अगर यथार्थ की दुनियाँ को विस्तार देती और उसका आविष्कार करती है, जैसा कि फ्रान्सीसी आलोचक ने कहा है तो कवि की दृष्टि निश्चय ही इसमें योग दे सकती है।<sup>4</sup>

इस प्रकार अज्ञेय ने अपनी कहानियों में विविध गद्य शैलियों का प्रयोग किया है। यह विविधता विषय वस्तु की विविधता और व्यापकता के कारण आई है। अज्ञेय ने अपनी कहानियों में जितने प्रकार के विषय उठाये हैं उनके अनुरूप भाषा शैली का प्रयोग भी किया है। इससे जहाँ एक ओर उनके अनुभव की व्यापकता प्रमाणित होती है वहीं दूसरी ओर शिल्प संबंधी उनकी अप्रतिम सचेष्टता भी जाहिर होती है। एक बहुपठित लेखक होने के कारण इन्होंने अन्य भाषाओं की गद्य शैलियों का भी समाहार किया है। एक तटस्थ आलोचक की भाँति अपने ही बारे में कहे गये उनके शब्दों को प्रमाण के रूप में उपस्थित किया जा सकता है – “उनकी कहानियों की संख्या अपेक्षया कम होते हुए भी उनमें रूप विधान की दृष्टि से असाधारण वैविध्य और शिल्पगत सफाई पायी जाती है। अज्ञेय के गद्य का अपना अलग ढंग है। अज्ञेय की भाषा सर्वत्र संयत रहती हुई विषय और वस्तु के साथ काफी बदलती रहती है। काव्यमयी वह नहीं होती पर उसका एक अपना छन्द रहता है, उसमें गद्य के लयमयता के उदाहरण मिल सकते हैं।”<sup>5</sup> इस प्रकार अज्ञेय की कहानियों की गद्य-शैली के विवेचन में हमें श्रेष्ठ गद्य के सारे गुण मिलते हैं।

### अज्ञेय की भाषा और आधुनिकता –

अज्ञेय का साहित्य हिंदी साहित्य में एक प्रमुख मोड़ के रूप में उभरा, जिसमें परंपरागत रूपों और विचारों के साथ-साथ आधुनिकता की नई लहर भी देखने को मिलती है। उनका लेखन विशेष रूप से आधुनिकता के दार्शनिक और सामाजिक आयामों को उजागर करने के लिए जाना जाता है। अज्ञेय ने अपनी भाषा में आधुनिकता को जितना अपनाया, उतना ही उसे अपने लेखन का हिस्सा बनाया, ताकि वह समकालीन समाज और मानसिकता का सटीक चित्रण कर सकें।

**(1) आधुनिकता के प्रतीक के रूप में भाषा का प्रयोग :** अज्ञेय की भाषा न केवल साहित्यिक रूप से आधुनिक है, बल्कि वह समकालीन यथार्थ और मानसिक अवस्थाओं के प्रतीक के रूप में भी कार्य करती है। वे भाषा को केवल संवाद का माध्यम नहीं मानते, बल्कि उसे विचारों, मानसिक द्वंद्वों और सामाजिक बदलावों को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त उपकरण मानते हैं। उनकी कहानियाँ अक्सर उस मानसिक और सामाजिक स्थिति की अभिव्यक्ति होती हैं, जो आधुनिक समाज के विशिष्ट संकटों और समस्याओं को प्रदर्शित करती हैं। उदाहरण के लिए, अज्ञेय की प्रसिद्ध कहानी हथियारे में न केवल पात्रों के मानसिक संघर्षों को देखा जा सकता है, बल्कि उस दौर के राजनीतिक और सामाजिक परिवेश की जटिलताओं को भी उनकी भाषा के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। उनके लेखन में समाज के विखंडन, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अस्तित्ववादी चिंताओं को उनकी भाषा के प्रयोग में स्पष्ट रूप से महसूस किया जा सकता है।

**(2) नवाचार और प्रयोगशीलता :** अज्ञेय ने परंपरागत हिंदी साहित्य से बाहर निकलकर आधुनिकता की प्रवृत्तियों को अपने लेखन में लागू किया। उनकी भाषा में पारंपरिक वाक्य, संरचनाओं और शब्दों से हटकर नयापन और प्रयोगात्मकता की झलक मिलती है। उन्होंने कई शैलियों का प्रयोग किया, जैसे—कविता का गद्य में समावेश, प्रतीकात्मकता का प्रयोग, और संवादों में नयापन। यह प्रयोगशीलता आधुनिकता की आवश्यकता थी, जिसे अज्ञेय ने प्रभावी ढंग से अपनाया। वे एक साथ काव्यात्मकता और गद्य की ताजगी को जोड़कर भाषा का नया रूप प्रस्तुत करते हैं, जिससे उनकी कहानियाँ और अधिक प्रभावी और समकालीन बन जाती हैं।

**(3) समाज, अस्तित्ववाद और मानसिकता का चित्रण :** अज्ञेय की कहानियाँ समाज की वर्तमान स्थिति और मनुष्य के अस्तित्ववादी संघर्षों को अभिव्यक्त करने के लिए गहरी मानसिकता की आवश्यकता महसूस करती हैं। उनका लेखन केवल बाहरी घटनाओं और कथाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि वे समाज के आंतरिक जटिलताओं, असंतोष और मानसिक संघर्षों को भी अपने पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। उनकी भाषा में कभी—कभी निराशा, अकेलापन, अस्तित्व के संकट, और आत्मनिर्भरता के विचार झलकते हैं, जो अस्तित्ववादी चिंताओं के आधार पर आधारित होते हैं। अज्ञेय की कहानियों में मनुष्य का आंतरिक द्वंद्व, उसकी पहचान का संकट और जीवन के प्रति उसकी प्रतिक्रिया को गहराई से चित्रित किया गया है। यह आधुनिकता की मुख्य विशेषता थी, जिसे अज्ञेय ने अपनी भाषा और शैली के माध्यम से प्रस्तुत किया।

**(4) सामाजिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में भाषा का प्रयोग :** अज्ञेय की भाषा में समाज और राजनीति की समस्याओं का भी गहरा प्रभाव दिखता है। उनकी कहानियों में समाज के विभिन्न वर्गों के बीच का भेदभाव, असमानताएँ, और निराशाएँ स्पष्ट रूप से व्यक्त होती हैं। वे समाज की विडंबनाओं, द्वंद्वों और संघर्षों को अपनी भाषा के माध्यम से उजागर करते हैं। उनकी कहानी ‘तमस’ में विशेष रूप से राजनीति और सामाजिक धारा के अंतर्गत हुए सांप्रदायिक संघर्षों की जो गहरी नफरत और भयंकर परिणाम सामने आते हैं, वह अज्ञेय की आधुनिक दृष्टि को प्रदर्शित करता है। उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए पात्र और उनकी मानसिक स्थिति समाज के अव्यक्त तनाव और आंतरिक विखंडन को बखूबी व्यक्त करते हैं, जो आधुनिकता के संकट को प्रकट करते हैं।

**(5) नैतिकता, स्वतंत्रता और मानवाधिकार :** अज्ञेय ने अपनी भाषा के माध्यम से नैतिकता, स्वतंत्रता और मानवाधिकार जैसे आधुनिक विचारों को भी प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने पात्रों के माध्यम से यह दिखाया कि समाज में नैतिकता के सवाल कैसे बदल रहे हैं और लोग व्यक्तिगत स्वतंत्रता की ओर कैसे बढ़ रहे हैं। उनकी कहानियों में न केवल सामाजिक सरोकारों की बात की गई है, बल्कि मानसिक और दार्शनिक स्तर पर भी उनकी कहानियों में जीवन के अर्थ, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अस्तित्व के उद्देश्य पर विचार किया गया है। उनकी भाषा उन विचारों को सहजता से व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम बनती है।

**(6) भाषा में अस्मिता और पहचान की खोज :** अज्ञेय की भाषा में न केवल सामाजिक और राजनीतिक स्थितियों का चित्रण है, बल्कि यह उनकी पात्रों की आंतरिक अस्मिता और पहचान की खोज को भी प्रकट करती है। उनके पात्र अक्सर खुद की पहचान, आत्मनिर्भरता और आत्म-साक्षात्कार की ओर बढ़ते हैं। यह आत्मअन्वेषण और पहचान की खोज आधुनिकता के महत्वपूर्ण पहलू थे, जिन्हें अज्ञेय ने अपनी भाषा के माध्यम से व्यक्त किया।

### अज्ञेय की भाषा की विशेषताएँ –

अज्ञेय की भाषा का रूप अत्यंत विविधतापूर्ण, सशक्त और प्रयोगात्मक है। उन्होंने अपनी लेखनी में भाषा का प्रयोग न केवल कथा को व्यक्त करने के लिए किया, बल्कि उस माध्यम से समाज, मानव अस्तित्व और मानसिकता को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया। उनकी भाषा में कुछ विशेषताएँ हैं जो उनके साहित्य को अन्य लेखकों से अलग करती हैं। ये विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:-

**(1) सहजता और गहराई का संतुलन :** अज्ञेय की भाषा में सहजता और गहराई का अनोखा संतुलन मिलता है। उनकी कथाएँ आम जीवन की घटनाओं, स्थितियों और पात्रों के माध्यम से गहरे दार्शनिक और मानसिक प्रश्नों को उठाती हैं। वे जटिल विचारों को भी सरल और प्रवाहपूर्ण भाषा में व्यक्त करते हैं। इस कारण उनकी कहानियाँ सामान्य पाठकों से लेकर गहरे साहित्यिक अध्ययन करने वाले पाठकों तक को समान रूप से आकर्षित करती हैं।

(2) **प्रयोगात्मकता** : अज्ञेय की भाषा में प्रयोगशीलता बहुत प्रमुख है। उन्होंने पारंपरिक हिंदी गद्य से हटकर नए प्रयोग किए। उनकी भाषा में लयात्मकता, काव्यात्मकता और प्रतीकात्मकता का मिश्रण देखा जा सकता है। वे कभी-कभी व्याकरण की पारंपरिक संरचनाओं से बाहर जाकर नए तरीके से वाक्य रचना करते हैं, जिससे उनकी कहानियाँ अधिक प्रभावी और दिलचस्प बनती हैं। उनके प्रयोगों में न केवल शब्दों का, बल्कि वाक्य संरचनाओं का भी नया रूप देखने को मिलता है।

(3) **संवेदनात्मकता और प्रतीकात्मकता** : अज्ञेय की भाषा में गहरी संवेदनात्मकता और प्रतीकात्मकता का उपयोग बहुत अधिक होता है। वे भाषा के माध्यम से किसी वस्तु, घटना या भावना का चित्रण करते हुए उसे एक प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो गहरे अर्थ और विविधताओं को उत्पन्न करता है। इस प्रतीकात्मकता के माध्यम से वे पाठक को न केवल बाहरी घटनाओं का, बल्कि मानसिक और आंतरिक संघर्षों का भी उद्घाटन करते हैं। उनकी कहानियाँ इस प्रकार पाठकों को नए दृष्टिकोण से सोचने की प्रेरणा देती हैं।

(4) **नवाचार और आधुनिकता** : अज्ञेय की भाषा में आधुनिकता का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखता है। वे अपनी कहानियों में नए विचारों, नवीन दृष्टिकोणों और समाज के बदलते स्वरूप को प्रस्तुत करते हैं। उनकी भाषा में अभिव्यक्तिवादी प्रवृत्तियाँ, अस्तित्ववादी चिंताएँ और समकालीन समाज के सवालों को जगह दी जाती है। भाषा का यह नवाचार न केवल उनके कथ्य को आधुनिक बनाता है, बल्कि वे पुरानी साहित्यिक परंपराओं से बाहर निकलकर कुछ नया करने का प्रयास करते हैं।

(5) **विविधता और बहुस्तरीयता** : अज्ञेय की भाषा विविधतापूर्ण और बहुस्तरीय है। वे अपने लेखन में कई शैलियों का प्रयोग करते हैं, जैसे— संवादात्मक, वर्णनात्मक, विचारात्मक आदि। उनकी कहानियों के पात्र भी बहुआयामी होते हैं, जिनके संवाद और मानसिक द्वंद्व उनकी भाषा में विशेष रूप से परिलक्षित होते हैं। यह विविधता पाठकों को मानसिक और संवेदनात्मक स्तर पर आकर्षित करती है और उन्हें हर कहानी के भीतर एक नई दुनिया में प्रवेश करने का अनुभव देती है।

(6) **संवेदनाओं की सूक्ष्मता और मानसिकता का प्रतिबिंब** : अज्ञेय की कहानियाँ मनुष्य के मानसिक और आंतरिक संघर्षों को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम बनती हैं। उनके पात्रों की मानसिक स्थिति और उनके आंतरिक द्वंद्व उनकी भाषा में बारीकी से उभरकर सामने आते हैं। अज्ञेय की भाषा के शब्द, वाक्य संरचनाएँ और संवाद मानसिक स्थिति की सूक्ष्मता को व्यक्त करने में मदद करते हैं। यह एक प्रकार का मानसिक चित्रण होता है, जिसमें न केवल बाहरी घटनाओं, बल्कि मनुष्य की आंतरिक स्थिति का भी गहरा विश्लेषण होता है।

(7) **स्थानीय रंग और बिंबात्मकता** : अज्ञेय की भाषा में स्थानीय रंग और बिंबात्मकता का भी प्रभाव दिखता है। वे अपनी कहानियों में समय और स्थान के अनुसार भाषा का चयन करते हैं, जिससे उनका गद्य अधिक जीवंत और प्रामाणिक लगता है। वे किसी विशेष स्थान या परिवेश को चित्रित करते हुए उसकी विशेषताओं को अपनी भाषा में समाहित करते हैं, जो पाठकों को उस समय और स्थान की मानसिकता और संवेदनाओं को महसूस कराता है।

(8) **सरलता और जटिलता का मिश्रण** : अज्ञेय की भाषा में एक खास प्रकार की सरलता और जटिलता का मिश्रण मिलता है। उनकी भाषा सरल और सहज प्रतीत होती है, लेकिन उसके भीतर गहरे अर्थ और विचार छिपे होते हैं। पाठक को कहानी के स्तर पर तो सहजता का अहसास होता है, लेकिन उसके भीतर के मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक तत्व धीरे-धीरे खुलते हैं। इस कारण उनकी कहानियाँ एक सतत अध्ययन और चिंतन की प्रक्रिया बन जाती हैं।

### निष्कर्ष –

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अज्ञेय की कहानी शैली हिंदी साहित्य में आधुनिकता, प्रयोगधर्मिता और गहन संवेदनशीलता का प्रतीक है। उन्होंने पारंपरिक कहानी के ढांचे को तोड़कर इसे एक नया रूप और दृष्टि प्रदान की। उनकी कहानियों में मनोवैज्ञानिक गहराई, अस्तित्ववाद और मानवीय संवेदनाओं का अद्भुत संतुलन मिलता है। अज्ञेय की कहानियाँ व्यक्ति के आंतरिक संघर्ष, समाज की विडंबनाओं और संबंधों की जटिलता को बड़े ही संवेदनशील और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती हैं। उनकी भाषा सहज, प्रवाहमयी और प्रतीकात्मक है, जो पाठकों को गहराई से जोड़ती है। उन्होंने कहानी को केवल घटनाओं का प्रस्तुतीकरण नहीं रहने दिया, बल्कि इसे विचारों, भावनाओं और दर्शन का माध्यम बनाया। उनकी कहानी शैली का महत्व इस बात में निहित

है कि उन्होंने हिंदी कहानी को एक गहन और बहुआयामी स्वरूप दिया, जिससे यह न केवल भारतीय साहित्य, बल्कि विश्व साहित्य के स्तर पर भी सराही जा सके। उनकी कहानियाँ साहित्य के क्षेत्र में न केवल पठनीयता, बल्कि विचारशीलता और संवेदनशीलता का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

### संदर्भ –

- <sup>1</sup> अज्ञेय – लौटती पंगडडियाँ (भूमिका), पृष्ठ 7–8
- <sup>2</sup> अज्ञेय – लौटती पंगडडियाँ, पृष्ठ 12
- <sup>3</sup> अज्ञेय – लौटती पंगडडियाँ (बसंत), पृष्ठ 313
- <sup>4</sup> अज्ञेय – हिन्दी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य, पृष्ठ 111
- <sup>5</sup> अज्ञेय – हिन्दी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य, पृष्ठ 108